ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 9 कुल पृष्ठ-8 22 से 28 नवम्बर, 2018 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853119 सम्वत् 2075 का.शु.-14

आर्य समाज बरनाला, जिला–गुरुदासपुर, पंजाब के तत्वावधान में आयोजित 43 वाँ विश्व शांति महायज्ञ एवं आर्य महासम्मेलन धूमधाम के साथ सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की आर्य महासम्मेलन की अध्यक्षता

युवा संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द जी के 7 दिन तक हुए प्रभावशाली प्रवचन

पंजाब के विभिन्न जिलों से सैकड़ों आर्यजनों ने उत्साह से लिया भाग

आर्य समाज मंदिर, बरनाला, गुरुदासपुर, पंजाब के तत्वावधान में प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी 12 से 18 नवम्बर, 2018 तक 43वाँ विश्व शांति महायज्ञ एवं आर्य महासम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में 12 नवम्बर से आर्य समाज के तेजस्वी युवा संन्यासी तथा प्रखर वक्ता स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के प्रवचनों की धूम मची रही। विभिन्न स्थानों पर आयोजित कार्यक्रमों में स्वामी श्रद्धानन्द जी साध्वी विशोका यति जी के प्रवचन एवं श्री दिनेश शास्त्री जी के गीतों द्वारा आर्य समाज का प्रभावशाली प्रचार किया गया। 28 नवम्बर को प्रातः 9 बजे से 51 कुण्डीय विश्वशांति यज्ञ का अत्यन्त आकर्षक एवं प्रभावशाली आयोजन खुले मैदान में किया गया जिसमें ब्रह्मा पद को स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सुशोभित किया। उनके साथ यज्ञ के संयोजक तथा वेदपाठी के रूप में श्री हितेश शास्त्री तथा श्री अजय कुमार ने अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। यज्ञ की पूरी व्यवस्था में श्री विजय कुमार चाण्डल, श्री राघव सिंह, श्री नीरज, श्री मृदुल, श्री शुभम, श्री सौरभ, श्री श्याम लाल, श्री रवि कुमार, श्री राहुल, श्री नवनीत, श्री जसवीर एवं श्री विकास आदि ने अपना योगदान दिया। श्री प्रभजिन्दर आनन्द प्रधान कैमिस्ट एसोसिएशन गुरुदासपुर ने ध्वजारोहण कर यज्ञ का उद्घाटन किया। श्री यशपाल सिंह प्रधान आर्य समाज बरनाला ने इसका संयोजन किया। यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी एवं स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती जी ने उपस्थित यजमान परिवारों एवं यज्ञ प्रेमी महानुभावों को आशीर्वाद देकर उन्हें यज्ञ करते रहने की प्रेरणा दी।

11.30 बजे से आर्य महासम्मेलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री ओम प्रकाश आर्य मुख्य अतिथि के रूप में विराजमान थे। उनके अतिरिक्त श्री अरविन्द मेहता, श्री भारत भूषण जगलालिया दीनानगर, श्री आर.एस. कटारिया डी.जी.एम. पंजाब नेशनल बैंक, प्रो. केवल कृष्ण महामंत्री जिला आर्य सभा गुरुदासपुर आदि भी मंच पर विराजमान थे। महासम्मेलन में श्रीमती मधुरभाषिणी मंत्री एस.एस. डी.ए.वी. सीनियर सेकेण्डरी स्कूल अवांखा, दीनानगर, श्री राकेश काठिया प्रधान आर्य समाज रमदास, श्री जितेन्द्र त्रेहन गुरुदासपुर आदि भी विशेष रूप से सम्मेलन में सम्मिलित रहे। प्रारम्भ में दीप प्रज्ज्वलित कर मंगलाचरण के मंत्रों का पाठ किया गया। दीप प्रज्ज्वलन की विशेषता यह थी कि इसमें सभी छात्राओं को अवसर प्रदान किया गया था। दीप प्रज्ज्वलित करने वाली छात्राओं में कुमारी मिताली, कुमारी गुलशन, कुमारी स्वाती जग्गी, कुमारी अक्षिता जग्गी, कुमारी श्वेता जग्गी, कुमारी वैशाली डोगरा, कुमारी मुस्कान डोगरा, कुमारी मानसी डोगरा, कुमारी रीना नरियाल तथा स्वाति देवी आदि के नाम उल्लेखनीय है। इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन आर्य समाज के मंत्री कर्मठ कार्यकर्ता श्री तरसेम लाल आर्य ने किया। उनके साथ सर्वश्री यशपाल सिंह प्रधान, दिलावर सिंह संरक्षक, रमेश चन्द्र कोषाध्यक्ष, सुशील बरनाला, प्रेस सचिव, श्रीमती राजकुमारी प्रधाना आर्य समाज, श्रीमती सोनिया गुलशन मंत्राणी, श्रीमती कांता रानी कोषाध्यक्ष आदि के अतिरिक्त मा. गुरुदित सिंह, श्री श्रवण कुमार पूर्व सरपंच, श्री जगदीश सिंह पूर्व सरपंच आदि का भी विशेष सहयोग रहा। पंजाब के प्रसिद्ध लोक गायक एवं आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री अमरीक सिंह उर्फ जग्गी ठाकुर के भजनों का भी जनसमूह ने आनन्द प्राप्त किया।

इस अवसर पर आर्य समाज रमदास, महर्षि दयानन्द धाम अमृतसर एवं आर्य समाज बरनाला की टीम ने बहुत सुन्दर गीतों की प्रस्तुति दी। महासम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री ओम प्रकाश आर्य ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर विस्तार से प्रकाश डाला और कहा कि महर्षि दयानन्द जी अपने जीवन में सत्य से कभी नहीं हटे। उन्होंने मानवता के उपकार के लिए 17 बार जहर पिया और हिन्दुओं में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को मिटाने के लिए अपना बलिदान दे दिया। उनकी प्रेरणा से ही अनेक क्रांतिकारी स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े थे और देश को आजाद कराने के लिए कितने ही बलिदानियों ने फांसी के फंदों को चूम लिया था। ऐसे महर्षि द्वारा स्थापित आर्य समाज ही देश को अन्धकार से निकाल सकता है। इसलिए आर्य समाज के साथ सभी लोगों को जुड़कर आन्दोलन करना चाहिए तथा सामाजिक बुराईयों को दूर करने में अपना योगदान देना चाहिए।

अपने अध्यक्षीय भाषण में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने लगभग एक घण्टे तक धारा प्रवाह आर्य समाज की मूल मान्यताओं पर प्रकाश डालते हुए जनता का आह्वान किया कि धर्म के नाम पर चल रहे पाखण्ड, अन्धविश्वास, नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, भ्रष्टाचार, जातिवाद एवं सांस्कृतिक पतन के विरुद्ध पूरे देश में अभियान चलाने की जरूरत है।

उन्होंने कहा कि आज देश विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के कारण त्राहि–त्राहि कर रहा है। चाहे पाखण्ड हो, भ्रष्टाचार हो, नशाखोरी हो, चाहे जातिवाद या साम्प्रदायिकता हो सभी बुराईयों ने समाज के ताने–बाने को तोड़ रखा है। इस देश को पुनः सोने की चिड़िया बनाना है या यूं कहें कि इसे पुनः आर्यावर्त बनाना है, तो आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्ता को इन बुराईयों को मिटाने के लिए कमर कसनी होगी। तभी हम इस देश को एक सशक्त और चरित्रवान राष्ट्र बना सकेंगे। स्वामी जी ने अपने ओजस्वी उद्बोधन में कहा कि नशाखोरी, धूम्रपान, मदिरापान आदि ने देश की युवा शक्ति को खोखला कर दिया है। जिसके कारण परिवार उजड़ रहे हैं। सामाजिक प्रतिष्ठा गिर रही है। चारो तरफ भय एवं आतंक का वातावरण व्याप्त है। इसके साथ ही वर्तमान शिक्षा पद्धति हमारे बच्चों को वो सब नहीं दे पा रही है जिसकी उसे आवश्यकता है। बच्चों में जब तक संस्कार व्याप्त नहीं किये जायेंगे तब तक देश से भ्रष्टाचार तथा अन्य बुराईयाँ दूर नहीं की जा सकती। आज आवश्यकता इस बात की है कि देश में विकल्प के रूप में गुरुकुलीय शिक्षा प्रारम्भ की जाये। जहाँ बच्चों को संस्कार देने के साथ–साथ उनका सर्वांगीण विकास किया जाता है। स्वामी जी ने कहा कि पूरे देश में इन बुराईयों के विरुद्ध जनान्दोलन चलाकर लोगों को जागरूक करने की अत्यन्त आवश्यकता है। स्वामी जी ने कहा कि आज नारी गरिमा की सुरक्षा के लिए अनेकों कानून बने हैं और सामाजिक, शैक्षिक एवं राष्ट्रीय जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं ने अपनी योग्यता का लोहा मनवा लिया है लेकिन महिलाएँ अभी भी सुरक्षित नहीं हैं। उसे भोग्या मानने वालों की संख्या आज भी कम नहीं है। अपहरण, बलात्कार, हत्या, छेड़खानी, असमानता और उत्पीड़न का शिकार उन्हें आज भी होना पड़ रहा है। और इन सबका एक मात्र कारण है कि हम अपनी भारतीय संस्कृति को भूल चुके हैं। उन्होंने कहा कि संस्कारविहीन पीढ़ी से हम जो अपेक्षाएं कर रहे हैं वह पूरी कैसी हो सकती हैं। आचार और विचार जब दोनों दूषित होंगे तो महिलाओं को हम सुरक्षित कैसे रख पायेंगे। उन्होंने कहा कि महिलाओं का सम्मान करना और उनको बराबरी का दर्जा दिलवाने के लिए अभी भी बहुत कुछ करने के लिए बाकी है। सबसे बड़ी आवश्यकता है कि हम अपने युवाओं को संस्कारित करने के लिए विशेष प्रयास करें।

स्वामी जी के भाषण के बाद श्री तरसेम लाल आर्य ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा सभी ने सुन्दर प्रीतिभोज का आनन्द उठाया।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

वेदों में समानता के सिद्धांत

–डा. धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री

समानता शब्द से क्या अभिप्राय है? प्रतीत होता है कि सामाजिक समरसता, सामाजिक राष्ट्रीय पारिवारिक सौमन्स्य व सामंजस्य की स्थापना करना ही समानता है। समानता में सुख है सबका कल्याण है। यह साम्य में भाव ही समानता कहलाता है 'समत्वं योग उच्यते' (गीता)

सब मानव जाति जन्म से एक से अवयवों वाला शरीर प्राप्त करती हैं तो इनमे परस्पर भेद होने का कोई कारण नहीं एक समान गर्भ की अवधि में माता के उदर में सब का विकास होता है एक ही प्रकार से सब का जन्म होता है तो विभिन्नता का क्या कारण? वेदों में ना केवल मनुष्यों को अपितु प्राणी मात्र को मित्र की दृष्टि से देखने का वर्णन मिलता है।

मित्रस्याहं चक्षुषासर्वाणि भूतानि समीक्षे। (यजुर्वेद 36/18)

वास्तव में कुछ लोग प्रसिद्ध पुरुषसूक्त के 'पद्भ्यां शूद्रो अजायत' (ऋग्वेद 10.90.12) इस मंत्राश का हवाला देकर यह समझने लगते हैं कि शूद्रों का स्थान पावों में है इसलिए वे नीच है, निन्दित हैं और यह सोचकर उनका अपमान व तिरस्कार हैं परंतु जिस प्रकार शरीर में विभिन्न अवयवों की उपयोगिता होती है तथा प्रत्येक अंग का अपना–अपना कार्य एवं महत्व होता है उसी प्रकार समाज में ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र रूपी अंगो की उपयोगिता एवं उपादेयता है इनके अपने–अपने का हैं और सब का महत्व है। प्रश्न यह है कि क्या पांव निकृष्ट हैं या अनावश्यक हैं। सत्य तो यह है कि समस्त शरीर का आधार पांव है। उसी प्रकार शूद्र समाज के आधार हैं वह किसी भी प्रकार से निकली गाड़ी नहीं कहे जा सकते हैं। इन्हीं के कारण समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। संपूर्ण मानव समाज के यह आधार हैं। वर्ण शब्द का मतलब ही है चुनना चयन करना। प्रत्येक व्यक्ति अपनी योग्यता और रूचि के अनुसार स्वतंत्रता पूर्व कर्मों को करता है उनके भेद हैं पढ़ना पढ़ाना विद्या के क्षेत्र में ज्ञानार्जन के क्षेत्र में कार्यरत होना कुछ लोग राष्ट्र समाज व पारिवारिक रक्षा में सहयोग देते हैं। कुछ लोग राष्ट्र की संपत्ति के उत्पादन संवर्धन एवं संरक्षण में अपनी भूमिका निभाते हैं। कुछ लोग शारीरिक तप, श्रम से उपर्युक्त तीनों कर्मों में सहयोग प्रदान करते हैं। इन्हीं चारों भेदों में मनुष्य समाज विभक्त होता है और प्रत्येक समुदाय को क्रम से ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र वर्ण से कहा जाता है ऋग्वेद में वर्णन है –

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः।
उरु तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्यां शूद्रोऽजायत।।

प्रश्न उपस्थित होता है यह चारों वर्ण जन्म से होते हैं? नहीं। जिस मनुष्य में जैसे गुण कर्म और स्वभाव होते हैं तद्नुसार ही वह उस वर्ण का अधिकारी होता है, जन्म से नहीं। इसीलिए गीता में भी जन्म को महत्व न देकर कर्म को ही महत्व प्रदान किया गया है – **चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।** गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार चार वर्णों की सृष्टि की है। कोई भी व्यक्ति किसी भी विशेष वर्ग में जन्म लेकर अपने कर्म के आधार पर किसी भी दूसरे वर्ग में आने में समर्थ हैं। तो क्या शूद्र भी जन्म से नहीं होता? कदापि नहीं। जन्म से वर्ण होता ही नहीं है जन्म के समय किसी भी मनुष्य में यह योग्यता नहीं होती कि वह स्वयं अपनी योग्यता और रूचि के अनुसार काम कर सके यह योग्यता तो विद्यार्थी अवस्था की समाप्ति अर्थात युवा अवस्था में ही हो सकती है। वेदों के अनुसार समाज में ना तो कोई बड़ा है और ना ही कोई छोटा। **''अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरों वावृधुः सौभगाय।''** (ऋग्वेद 5/60/5)

सभी परस्पर भाई है। सौभाग्य अथवा उन्नति के लिए साथ बढ़ते हैं। समस्त मानव जाति को प्रेम की दृष्टि से देखने का निर्देश अथर्ववेद में मिलता है –

''प्रियं सर्वस्य पश्यत उत शूद्रे उतार्ये।

समाज में सभी चातुर्वर्ण में सबमें समान रूप से शोभा या दीप्ति का आधार करने की प्रार्थना की गई है, जिससे सब का कल्याण हो और कोई भी अपमानित ना हो। **रुचं नो धेहि..... राजसु नस्कृधि।** (यजुर्वेद 18.48)

समाज में सभी कार्य करने वालों का समान महत्व है, सबका एक जैसा सम्मान है। इसीलिए इस मंत्र में सबको नमस्कार किया गया है – बढ़ई, रथनिर्माता, कुम्हार, लोहार शिकारी आदि –

''नमस्तक्षेभ्यो स्थकारेभ्यश्च वो नमो नमः, कुलालेभ्य कर्मारेभ्यश्च वो नमः।'' (यजुर्वेद 16.17–46)

यह वेद का ज्ञान सार्वजनिक है सार्वकालिक है सार्वभौमिक है। समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए सृष्टि के आदि में भगवान ने यह ज्ञान प्रदान किया है –

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। (यजुर्वेद 26.2)

पुरुषों के समान स्त्री जाति के लिए समान अवसर वेद में दर्शित है वह भी ब्रह्मचर्य का पालन करती हुई युवक पति को प्राप्त करती है–

'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्।' (अथर्ववेद 11.5.18)

स्त्री को वेद में सामान्य सम्मान ही नहीं दिया गया, अपितु उसे परा शक्ति बताया गया है। वह अधिष्ठात्री है। वह अदिति है अखंड शक्ति है। नववधू को कहा गया है कि तू अपने श्वसुर, सास, देवर, ननद अर्थात पूर्ण परिवार की साम्राज्ञी बन जा –

सम्राज्ञी श्वसुरे भव सम्राज्ञी श्वश्र्वो भव। (अथर्ववेद 14.1.22)

पति–पत्नी के समान व्यवहार को बताते हुए दोनों के सहयोग को चकवा–चकवी के सहयोग की उपमा दी गई है –

'चक्रवाकेव दम्पती।' (अथर्ववेद 14.2.64)

पारिवारिक सामंजस्य का समन्वय हो, समस्त मानव जाति परिश्रम करें। इसी के साथ मेहनत परिश्रम करते हुए जीने की इच्छा करे, यह उपदेश निम्न मंत्राश में मिलता है –

कुर्वन्नेह कर्माणि जिजीविषेत्। (यजुर्वेद 40.2)

सभी को कर्म करना चाहिए। जागने वाला व कर्म करने वाला मनुष्य ही ऐश्वर्य सुख प्राप्त कर सकता है। वेद समस्त मानव जाति को श्रेष्ठ बनने का आदेश करता है **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।'**

वेद में किसी संप्रदाय का जाति विशेष का, मत–मतान्तरों का उल्लेख नहीं है। केवल मात्र मनशील मनुष्य बनने तथा औरों को भी दिव्य जीवन के लिए प्रेरित करने का उपदेश है –

''मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।'' (ऋग्वेद 10.53.6)

वैदिक दृष्टिकोण विशाल एवं व्यापक है। इसके अनुसार यह सारा संसार एक गांव है और उसके प्रत्येक प्राणी के सुख की कामना की जाती है –

'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्।'

प्राणी मात्र की आत्मा को अपने समान समझना एवं अपने को सब के समान समझना। यह आत्मवत् दृष्टि ना केवल मनुष्य जाति के प्रति होनी चाहिए अपितु पशु–पक्षी सभी प्राणियों के प्रति भी होनी चाहिए। इतनी व्यापकता, उदारता भरे शब्दों में ऋषि कहता है –

''यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मन्नेवानुपश्यति।'' (यजुर्वेद 40.7)

ऐसे व्यक्ति के लिए सारा संसार एक इकाई बन जाता है – सभी भाषा गत रंग जाति संप्रदाय आदि भेदभाव से रहित हो जाता है यही है। **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की भावना।

संसार के किसी भी देश का व्यक्ति हो प्रदेश या संप्रदाय का हो, उसकी रक्षा करना मनुष्य मात्र का कर्तव्य है –

पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः।)ऋग्वेद 6.75.14)

वेद की दृष्टि में समस्त पृथ्वी ही एक विशाल, सब के साथ साथ रहने का स्थान है, जिससे सभी प्रकार के लोग एक साथ यहां रह सके –

महत्राधस्थं महती बभूविथ। (अथर्ववेद 12.1.18)

पृथ्वी की समग्र दृष्टि वेद की सार्वभौमिकता एवं समानता का उज्ज्वल प्रमाण है। पृथ्वी की सभी दिशाओं उपदिशाओं में रहने वाले लोगों में कोई भेदभाव नहीं है। जहां अन्यान्य सं प्रदाय अपने–अपने संप्रदाय के लोगों के विषय में ही सोचते हैं, वहां वेद समस्त मानवता के लिए समग्र दृष्टि प्रस्तुत करते हैं।

वेद के अनुसार पृथ्वी सब प्रकार के विचारों वाले कर्तव्यों का पालन करने वाले विभिन्न भाषाएं बोलने वाले सभी लोगों का एक घर है –

जन बिभ्रती बहुधा विवाचसं नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम्। (अथर्ववेद 12.1.45)

वेद के अनुसार सभी एक समान है, ऊंच नीच का कोई भेदभाव नहीं। एक–दूसरे का सम्मान, विवेकशील होना, सबको मिलकर गति प्रगति करने का शुभ अवसर मिले, एक दूसरे के प्रति मधुर भाषण, सबके सुख, शांति, प्रगति, समृद्धि के लिए कार्य करते हुए व्यवहार करने की भावना आदि सद्गुणों का विवरण मिलता है –

ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वियौष्ट..... समनसस्कृणोमि। (अथर्ववेद 3.3.5.1)

मनुष्य मनुष्य का परस्पर ऐसा प्रेम स्नेह व्यवहार हो, जैसे गाय का नवजात बछड़े के प्रति होता है। सारे संसार में सुख और शांति के लिए एक मन वाले होकर सब मनुष्यों को साथ साथ चलने व बोलने की प्रेरणा वैदिक ऋषि देता है –

सहृदयं सांमनस्यम्..... वत्सं जातमिवाघ्न्या। (अथर्ववेद 3.30.1)

इस समानता के लिए आवश्यक है, मनुष्य अकेला न खाए बांट कर खाने की भावना सबके मन में होनी चाहिए –

केवलाघो भवति केवलादी। (ऋग्वेद 10.1.17)

समस्त समाज में समानता केवल भौतिक स्तर पर नहीं होनी चाहिए, सब के मन सब के कल्याण में एक समान होने चाहिए। सब प्राणियों के दुखों का नाश और सब की सुख–समृद्धि की भावना की प्रमुख आवश्यकता है इसलिए वेद के उपदेश सारे समाज के पारस्परिक कल्याण के लिए और सबके सुख के लिए ही सब के कार्यों तथा उत्साह की प्रेरणा देता है। मनुष्यों को परस्पर सहायता करनी चाहिए, जिससे कि सबके सुख की उन्नति हो। सबके मनों में ऐसी समान भावना होनी चाहिए, जिससे कि दूसरों की प्रसन्नता में मनुष्य अपनी प्रसन्नता का अनुभव करें, किसी को दुखी देखकर प्रसन्न न हो। इस भावना का मूलाधार यजुर्वेद में वर्णित है –

यस्तु सर्वाणि भूतानि..... ततो न विचिकित्सति। (यजुर्वेद 40.6)

जो व्यक्ति सब प्राणियों को अपने आप में और अपने आप को सब प्राणियों में निरंतर देखता अथवा अनुभव करता है तब वह संदेह नहीं करता। ऐसा व्यक्ति सब प्राणियों में विद्यमान मूलभूत जीवन संबंधी समानता का अनुभव करता है। यदि किसी को दुख व कष्ट होता है, तो उसका हृदय करुणा से पिघल जाता है। उसे दुख की अनुभूति होती है। उसे अनुभूत होता है, जैसे यह कष्ट मुझे ही हो रहा है। यह समानता ही मानव धर्म है। इस समतामूलक मानव धर्म के अंगभूत सत्य, संकल्प, प्रेम, दया, करुणा, श्रद्धा इत्यादि गुण हैं। यह समत्व दृष्टि ना केवल मनुष्य मात्र के प्रति होनी चाहिए, अपितु समस्त प्राणी जगत के लिए होनी चाहिए –

विद्याविनयसम्पन्ने ब्राह्मणे गवि हस्तिनि शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः। (गीता 5.18)

यह सार्वभौम समत्व दृष्टि पूर्णतया वेदानुकूल है। यह समभाव ही ब्रह्म की प्राप्ति कराने वाला बताया है – (मनुस्मृति 12.125)

एवं यः सर्वभूतेषु पश्यत्यात्मानमात्मना, स सर्वसमतामेत्य ब्रह्माभ्येति परं पदम्।।

यह सर्व समभाव माता पिता पुत्र भाई भाई, भाई बहन पति पत्नी में यदि आ जाए तो परस्पर के झगड़े वैमनस्य द्वेश की भावना समाप्त हो जाए। वेद में ऐसे समभाव ऐसे परस्पर प्रेम का उपदेश है।

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्..... वाचं वदत भद्रया। (अथर्ववेद 3.30.2.3)

हम कल्पना कर सकते हैं कि पूर्ण समाज में यदि यह प्रेम, एकात्मता हो, तो समाज कितना सुखी होगा इस समानता का मतलब यह नहीं कि समाज से विविधता ही समाप्त हो जाए। यह बात वेद में भी स्वीकृत है। हमारे आचार विचार व्यवहार में विभिन्नता रहती ही है दोनों हाथ देखने में एक समान होने पर भी एक समान कार्य नहीं करते। दोनों में अंतर अवश्य होता है फिर भी सर्व कल्याण का एक उद्देश्य लेकर भी अपने स्वभाव के अनुसार मनुष्य उसी प्रकार रह सकता है जिस प्रकार पृथ्वी विविध रूपों वाली होती हुई भी सब प्रकार के मनुष्यों की रक्षा करने में तत्पर है।

जिस प्रकार सूर्य और चंद्रमा सब प्राणी मात्र के कल्याण की भावना से निरंतर कार्यरत होता है, उसी प्रकार हम भी सारे समाज के कल्याण मार्ग पर चलते रहें उस मार्ग पर चलने के लिए हम निरंतर दानशीलता, हिंसारहित, भावना, ज्ञानी व्यक्तियों का संर्सग प्राप्त करते रहें।

स्वस्ति पन्थामनुचरेम..... जानता संगमेमहि। (ऋग्वेद 5.51.15)

अथर्ववेद का भूमिसूक्त (अथर्ववेद 12.1) सार्वभौमिक भावना का उत्तम उदाहरण है। किसी भी देश के निवासियों को इन छह तत्वों – सत्य, ऋत, दीक्षा, तपस्या, ब्रह्म और आस्तिकता को धारण करना इसकी विशेषता है। इतनी व्यापक दृष्टि से समस्त मानवता के विषय में यह विचार व्यक्त किए हैं। सत्य का अर्थ केवल सत्य भाषण नहीं, सबके हित में शिष्ट आचरण है। ऋ सदा गतिशीलता को अपनाना। समाज के सब वर्ग मेहंती परिश्रमी हो आलसी प्रमादी ना बने अच्छे संकल्पवान हों परिश्रम करने वाले हो आस्तिकता तथा प्राणी मात्र के कल्याण की भावना सबके मनों में हो यह नियम प्रत्येक राष्ट्र के निवासियों में यदि हो जिनका पालन करके मनुष्य इस पृथ्वी को सुखमय बना सकता है। इन नियमों के पालन से हम इतने उदार बन जाएं कि हम क्षुद्र सीमाओं में ना बंधकर विशाल पृथ्वी को अपना निवास स्थान समझे। इन छः तत्तों के निर्देश द्वारा वेद समस्त संसार के मानव को श्रेष्ठ समाज के निर्माण की प्रेरणा देता है इनके पालन से सांप्रदायिकता की संकीर्ण संभावनाओं से मनुष्य मुक्त हो जाता है।

इस प्रकार विस्तृत विवेचन के आधार पर निष्कर्षतः यह प्रतीत होता है कि वेदों में समस्त मानव जाति को समानता की दृष्टि से देखने का विस्तार से वर्णन मिलता है वैदिक सामाजिक मान्यताएं उत्तम भावनाओं की प्रेरणा देने वाली है इनमें सर्वत्र सद्गुणों एवं सत कर्मो का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। भारत को यदि अपने स्वरुप को बनाए रखना है और स्वयं इस अशांति से बचकर विश्व को बचाना है तो वैदिक समाज के आदर्शों का अनुसरण करके सामाजिक संतुलन स्थापित करना होगा। जातिवाद और अन्य कुरीतियों को छोड़कर शोषित, दलित, वंचित वर्ग के साथ समानता का व्यवहार करना होगा। यही वेदों का मूल संदेश है।

– पूर्व सचिव दिल्ली संस्कृत अकादमी
मो.:– 999426474
ईमेल :– dharmendra064@gmail.com

शिक्षा और नैतिकता पर बौद्धिक चिन्तन : आधुनिक संदर्भ में

– आचार्य सोमेंद्र श्री, रिसर्च स्कॉलर दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत विषय की नितांत आवश्यकता है। शिक्षा में नैतिकता के बिना मानवीय मूल्यों का ह्रास दिन प्रतिदिन दिखाई दे रहा है। शिक्षा का मात्र उद्देश्य रोजी–रोटी तथा व्यवसाय प्राप्त करना ही ना होकर बालक का सर्वांगीण विकास करना है। शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक विकास से ही सर्वोन्नति संभव है। शिक्षा का उद्देश्य है – **'सा विद्या या विमुक्तये'** अर्थात विद्या वह है जो हमें सब प्रकार के दुखों से विमुक्ति दिलवाए। इसलिए ऋग्वेद का ऋषि कहता है – **'मनुर्भव'** मनुष्य बनो। मानवीय गुण प्रेम, दया, सहानुभूति, त्याग, सेवा, परस्पर सहयोग भावना, उत्तमोत्तम् आचरण शिक्षा, विद्या इत्यादि शुभ श्रेष्ठ गुणों द्वारा ही मनुष्य का निर्माण संभव है। इसी के द्वारा समाज एवं राष्ट्र को भी मंगलमय बनाया जा सकता है। शिक्षा का वैदिक आदर्श है – **सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्य करवावहै तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै।** इस मंत्र में शिक्षा के पांच उद्देश्य बताये हैं शारीरिक विकास, जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति सबका विकास, धर्म संस्कृति सभ्यता के प्रति उदात्त भावना, द्वेश भावना के स्थान पर गुरु शिष्य का आपसी सहयोग। इसी उद्देश्य को सामने रखकर शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है। ज्ञान, भक्ति और निष्काम कर्म शिक्षा के मूल तत्व है। यम और नियम के द्वारा भी समानता व एकरूपता की प्राप्ति की जा सकती है। वेद की उदात्त विचारधारा द्वारा विश्वबंधुत्व, विश्वशांति, समष्टिभावना, भद्रभावना, आशावाद, निर्भयता, श्रद्धा, सामंजस्य को प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षा का वैदिक नैतिक रूप इस वाक्य में दिग्दर्शित किया गया है – **''मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद''** जब तीन उत्तम माता–पिता और आचार्यगण होते हैं, तभी मनुष्य ज्ञानवान बनता है। वैदिक वाङ्मय की उन्नति में राजा राममोहन राय द्वारा स्थापित 'ब्रह्मसमाज' और स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा स्थापित 'आर्य समाज' ने विशेष सक्रिय कार्य किया है। ब्रह्मसमाज का ध्यान भारतीय गौरव रक्षा के लिए उपनिषदों की ओर रहा है और आर्य समाज ने वैदिक साहित्य पर बल दिया। यह निःसंकोच कहा जा सकता है कि आधुनिक समय में वैदिक साहित्य एवं शिक्षा पर जो कुछ कार्य हुआ है उसमें आर्य समाज का स्थान अग्रणी है।

शिक्षा के ध्येय एवं उद्देश्य के विषय में विचार करते हुए हमने निःसंदेह यह कह सकते हैं कि अंतःशक्तियों को समुचित रूप में विकसित कर देना ही शिक्षा का प्रथम एवं अंतिम ध्येय है। इसी आदर्श को हृदयंगम कर वैदिक ऋषि अपनी शक्तियों के विकास के लिए परमात्मा से प्रातः सायं इस प्रकार से प्रार्थना किया करते थे ईश्वर! हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करो – **'धियो यो नः प्रचोदयात्'** हे अग्निदेव! हमें आप सद्मार्ग से विश्व में ले चलें, ले ही न चले, अपितु आप हमारे हृदयों से दुर्गुण एवं पाप भावनाओं को निकालकर निष्पाप तथा शुद्ध पवित्र बुद्धि प्रदान करें, इसके लिए हम पुनः आपकी प्रार्थना करते हैं –

अग्नेनय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानिविद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयष्ठान्तिं नमः उक्ति विधेम।।

वैदिक ऋषि पवित्र भावभूमि पर स्थित होकर पुनः बुद्धि को मेधावी बनाने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता है –

यां मेधां देवगणां पितरश्चोपासते,
तया मामद्य मेधयाग्ने मेधाविनं कुरु।

इस प्रकार बुद्धि को मेधावी बनाने के लिए प्रार्थनाएं ही नहीं की जाती थीं, अपितु उसको पवित्र एवं कालुष्य रहित बनाने के लिए भी –

पुनन्तु मां देवजना पुनन्तु मनासाधियः,
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेद पुनीहि मा।।

इस प्रकार वैदिक शिक्षा का मूल आधार मानव की बुद्धि का परिष्कार कर सुपथ का दर्शन कराना था, वस्तुतः यही प्राचीन शिक्षा का ध्येय था। क्या आज की शिक्षा में कहीं भी इस प्रकार का पाठ्यक्रम निर्धारित है जो बुद्धि को मानवता के मार्ग का पथिक बना सके जिससे कि हम उच्च स्वर से आयु, प्राण, धन, तेज को प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करना न भूलें –

तेजोऽसि तेजो महि देही
वीर्यमसि वीर्य मयि धेहि
बलमऽसिबलं मयि धेहि
सहोऽसि सहोमयि धेहि

प्राचीन काल में **'सत्यम् शिवं सुंदरम्'** के अनुसार विश्व की कल्याण कामना ही वैदिक संस्कृति का प्रयोजन था। उसकी सिद्धि के लिए ऐहिक एवं पारलौकिक उन्नति करते हुए ब्रह्म के स्वरूप में भारतीय निमग्न हो जाते थे। वह ब्रह्म तप से प्राप्त होता था – **'ब्रह्म तल्लक्ष्यमुच्यते', 'तपसा चीयते ब्रह्म'** तथा तप की कसौटी के रूप में यम नियमों का पालन करने के लिए एक निर्देश प्रत्येक विद्यार्थी को तो दिया जाता था, साथ ही मानव मात्र को इनका पालन करना आवश्यक था। यम के अंतर्गत –

''तत्राऽहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमः'', तथा नियमों में **''शौच सन्तोषस्तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमाः''** अर्थात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह तथा मन, वचन, कर्म में पवित्रता शौच, संतोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान। इन यम एवं नियमों की उपयोगिता, महत्व एवं अनिवार्यता के विषय में कुछ कहना उचित न होगा, वस्तुतः ये मानव को पूर्ण मानव बनाने के साधन थे। इनका आज के छात्र समाज में पूर्णतः अभाव सा ही दृष्टिगोचर हो रहा है। जिस ब्रह्मचर्य का पालन कर देवताओं ने इच्छा मृत्यु प्राप्त की थी, उसका भी धवल यश वैदिक साहित्य में गाया गया है –

''ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नतः
मरणं बिन्दु पातेन जीवनं बिन्दु धारणात्।''

चरित्र की भी प्रशंसा की गई है कि चरित्र से रहित मनुष्य मृत प्रायः ही है –

अक्षीणो वित्ततः क्षीणो वृत्ततस्तु हतो हतः'

इस प्रकार प्राचीन निर्देशों के अनुसार हम कह सकते हैं कि प्राचीन छात्र व्रती एवं तपस्वी बनकर शिक्षोपार्जन किया करते थे।

प्राचीन काल की शिक्षा में मूल श्रद्धा की भावना थी किंतु आज के छात्र समाज में उसका पूर्णतः अभाव है वस्तुतः मानव जीवन की सफलता के लिए विभिन्न तत्वों में श्रद्धा का प्रधानतम स्वार्थ है। श्रद्धा से समस्त कार्य अनायास ही संपन्न हो जाते हैं श्रद्धा की भावना अपने गुरुजनों को बस में करने का सर्व सुलभ साधन है –

श्रद्धायाग्निः समिध्यते श्रद्धया हूयते हविः
श्रद्धा भगस्य मूर्धनि वचसावेदयामसि।

श्रद्धा भावना जब ऐश्वर्य तथा कल्याण की प्रदाता है तो क्या आज के छात्रों में श्रद्धा की भावना का संचार होने पर गुरु प्रदत्त शिक्षा जीवन उपयोगी नहीं हो सकती है? अवश्य हो सकती है। आज शिक्षा के क्षेत्र में फैली विश्रृंखलता के कारण छात्रों में श्रद्धा का अभाव है। वस्तुतः श्रद्धा ज्ञानार्जन का मूल तंत्र है जिस श्रद्धा की भावना ने नचिकेता में यम के मुख में जाकर प्रश्न करने के साहस का संचार किया था, ज्ञानार्जन करने में नचिकेता को समर्थ बनाया था। क्या वही श्रद्धा आज की शिक्षा में जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं करा सकती। संसार में श्रद्धाहीन मानव सदा से पद्दलित होते आए हैं। उनका सदा विनाश हो रहा है आज विनाश से बचने के लिए छात्र समाज को श्रद्धालु बनाने का उपाय करना चाहिए लेकिन हम देखते क्या है आज का छात्र माता–पिता एवं गुरुजनों के प्रति पूर्ण अवज्ञा की भावना को लिए सदैव तिरस्कृत सा करता है। उन्हीं कारण है कि वही गुरुजनों से प्रदत्त शिक्षा छात्र के लिए अभिशाप बन कर दुखदाई ही सिद्ध हो रही है। अतः छात्रों को तपानुष्ठान का आचरण करते हुए श्रद्धाशील बनाना चाहिए। वेद के शब्दों में वह व्रत पालन से ही संभव है –

व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षामाप्नोति दक्षिणाम्।
दक्षिणाश्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।

अर्थात् व्रत से दीक्षा, दीक्षा से दक्षिणा, दक्षिणा से श्रद्धा, श्रद्धा से सत्य। इस प्रकार क्रमशः मानव को सुपथ पर ले जाने के लिए यह एक पद्धति वेद में निर्दिष्ट है। इसका पालन कल्याण की कामना करने वाले के लिए आवश्यक है।

विद्या स्वयं ही दुष्टाचरण कर्ताओं से भयभीत रहती है अतः उनके पास जाकर भी उनका कल्याण न कर और अहित साधन ही करती है। इस संबंध में निरुक्त के यह वचन दृष्टव्य हैं –

विद्या आचार्य से कहती है – हे आचार्य! मेरी रक्षा करो, मैं तुम्हारी शरण हूं। ईर्ष्यालु, कुटिल एवं दुराचारी को मेरा दान न करो।

विद्याह वै ब्राह्मणमाजगाम गोपाय मा शेवधिष्टेष्हमस्मि,
असूयकायनूजवेऽयताय न मा ब्रूया वीर्यमती यथा स्याम्।

पुनश्च – विद्या उन्हें भी फलीभूत नहीं होती है जो कि गुरुओं का आदर नहीं करते –

अध्यापिता ये गुरं नाद्रियन्ते विप्र वाचा मनसा कर्मणा
यथैव ते द गुरोर्भोजतीयास्तथैव तान्नभुनक्ति श्रुतंतत्।

विद्या पवित्र शुद्धाचरण कर्ता मेधावी ब्रह्मचारी को अपनी कृपा से अनुग्रहीत करती है –

यमेव विद्या शुचिमप्तमन्तं मेधाविनं ब्रह्मचर्योपसन्नम्।
यस्ते न द्रु ह्योत्कृतमच्चनाह तस्मै मा ब्रूया निधिपाय ब्रह्मन्निति निधि शेबधिरिति।।

भगवान मनु का यह वचन भी दर्शनीय है –

उत्पादक ब्रह्म दात्रोर्गरीन्ब्रह्मदः पिताः।
ब्रह्मजन्म हि विप्रस्य प्रेत्य चेह च शाश्वतम्।।

उत्पादक पिता की अपेक्षा आचार्य अधिक महत्व का भागी होता है क्योंकि उत्पादक पिता ने तो केवल एक जन्म प्रदान किया है किंतु इस भवसागर से संतरण करने के लिए आचार्य ही मानव का पूर्ण व पवित्र निर्माण करता है। योगदर्शन में पंचक्लेशों अर्थात दुःखों का वर्णन मिलता है जिनमें अविद्या का वर्णन सर्वप्रथम किया गया है – **अविद्याऽष्मिता रागद्वेषाभिनिवेषा पंचक्लेशा''** वस्तुतः विद्या मानव को पतन के गर्त में ले जाकर यथासंभव दुखों से पीड़ित करती है। अतः इन दुःखों से मुक्ति प्राप्त करनी है तो ज्ञानार्जन करना चाहिए क्योंकि **'ऋते ज्ञानान्न मुक्ति'** ज्ञान की प्राप्ति का एकमात्र साधन शिक्षा संबंधी भारतीय विचारधारा का अनुपालन ही है। क्योंकि विद्या पात्रापात्र का विचार कर ही अनुग्रह करती है।

अतः यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि शिक्षा का पूर्ण विकास राष्ट्र की संस्कृति के आधार पर ही हो सकता है क्योंकि उसकी पृष्ठभूमि में अपने देश के आदर्शों का वरदहस्त रहता है। जिस प्रकार एक पौधा अपने अनुकूल जलवायु पर एवं मिट्टी से पृथक हो, अन्य भूमि पर विकसित नहीं हो सकता है उसी प्रकार किसी राष्ट्र की शिक्षा पद्धति अपनी संस्कृति की आधारशिला का परित्याग कर उन्नति नहीं कर सकती है। वैदिक काल की शिक्षा का पूर्ण विकास इसी पृष्ठभूमि पर हुआ है।

शिक्षा के आधुनिक संदर्भ में वैदिक शिक्षा कालीन सूत्रों की प्रासंगिकता आज और भी अधिक बढ़ जाती है। क्योंकि आज की शिक्षा प्रणाली में केवल मात्र जीविकोपार्जन की दृष्टि को महत्व दिया जाने लगा है। शिक्षा का यथार्थ उद्देश्य मानव के सर्वांगीण विकास की अवहेलना स्पष्ट परिलक्षित होती है। शिक्षा में नैतिकता का संपुट अवश्य दिया जाना चाहिए। प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार भारत सहित सारे संसार के कष्टों का कारण यह है कि शिक्षा का संबंध और आध्यात्मिक मूल्यों की प्राप्ति से ना रह कर केवल मस्तिष्क के विकास से रह गया है जिसमें हृदय मन और आत्मा की अवहेलना है उसे पूर्ण नहीं माना जा सकता, इन शब्दों पर सभी शिक्षाशास्त्रियों को गंभीरता से विचार करना चाहिए। प्रस्तुत विषय की प्रासंगिकता नितांत अनिवार्य है। इस पर गंभीरता से सभी शिक्षक साथियों को विचार विमर्श करना चाहिए।

● – **शास्त्री सदन**
ग्राम नित्यानंदपुर, पोस्ट शाहजहांपुर, जिला–मेरठ
(उत्तर प्रदेश), मो.:–9410816724

आर्य नेता श्री अनिल आर्य का जन्मोत्सव सोल्लास सम्पन्न

अहर्निष समाजोत्थान में व्यस्त रहने वाले श्री अनिल आर्य के व्यक्तित्व से प्रेरणा ले युवा शक्ति

– स्वामी आर्यवेश

सामाजिक कुरीतियों के विरूद्व जागरण करना आर्य समाज की विशेषता

– सांसद मीनाक्षी लेखी

नई दिल्ली । केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपाध्यक्ष श्री अनिल आर्य के जन्मोत्सव पर भव्य कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज, अमर कालोनी, लाजपत नगर, नई दिल्ली में श्री जितेन्द्र डावर की अध्यक्षता में किया गया। इस अवसर पर दिल्ली व आसपास के क्षेत्रों से सैकड़ों कार्यकर्ता बधाई देने पंहुचे। कार्यक्रम का शुभारम्भ आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवा कर किया व गायक पं. लक्ष्मीकांत काण्डपाल के मधुर भजन हुए।

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्री अनिल आर्य के दीर्घायुष्य और यशस्वी जीवन की कामना करते हुए कहा कि श्री अनिल आर्य का व्यक्तित्व हजारों युवाओं के लिये प्रेरणा का स्रोत है। इनका युवा उत्थान में उल्लेखनीय योगदान है। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के माध्यम से श्री अनिल आर्य जी निरन्तर युवाओं को सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आन्दोलित करते रहते हैं। इसके अतिरिक्त दिल्ली तथा आस–पास के क्षेत्रों में अनेकों कार्यक्रम करके युवाओं को आर्य समाज की मान्यताओं तथा सिद्धान्तों से परिचित कराने का कार्य युद्ध स्तर पर कर रहे हैं। साथ ही सामाजिक व राष्ट्रीय मुद्दो पर हमेशा आप अग्रणी भूमिका निभाते है, समाज को इनसे बहुत आशायें हैं।

समारोह की मुख्य अतिथि सांसद मीनाक्षी लेखी ने कहा कि आज समाज में बदलाव की जरूरत है, पाखण्ड–अन्धविश्वास बढ़ रहे हैं, सामाजिक कुरीतियों के विरूद्व आर्य समाज को फिर से आगे आने की आवश्यकता है । आर्य समाज के सक्रिय रहने से समाज में सुधार कार्य तेज होता है । देश की एकता अखण्डता में भी आर्य समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है अब इस कार्य को और अधिक आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। अनिल आर्य जी समाज उत्थान में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं मैं इन्हें इस अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएँ देती हूँ।

इस अवसर पर अभिषेक दत (पार्षद),ओम प्रकाश यजुर्वेदी, चतर सिंह नागर, ओमबीर सिंह, ओम प्रकाश छाबड़ा, यशोवीर आर्य, प्रवीन आर्य, के.के. यादव (गाजियाबाद), अजय गर्ग (पानीपत), रणजीत कौर (जयपुर), अर्चना पुष्करना, राजेश मेहन्दीरता, दर्शन अग्निहोत्री, सुशील आर्य, नरेन्द्र नांरग, कवि विजय गुप्त, विमलेश बंसल, बलराज सेजवाल, अनुराग मिश्रा, राधा भारद्वाज, सुरेश आर्य, सुनीता रसोत्रा, रवि चड्डा, सुरेन्द्र बुद्विराजा, नरेन्द्र आर्य सुमन, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, ओम सपरा, डी.के. यादव, डा. गजराज सिंह आर्य, रोजी पण्डित (फरीदाबाद), निखिल थरेजा, अनिल अवस्थी, सौरभ गुप्ता, अरूण आर्य आदि उपस्थित रहे।

सत्यार्थ प्रकाश : एक समाज वैज्ञानिक दृष्टि

– डॉ. श्याम सिंह शशि

लेखक परिचय : डॉ. श्याम सिंह शशि ने गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार के परिवेश में प्रारम्भिक वैदिक वाङ्मय का अध्ययन आर्य इंटर कॉलेज में अपनी स्कूली शिक्षा के साथ–साथ किया तथा कक्षा आठ से दसवीं तक प्रथम श्रेणी व कक्षा में प्रथम पोजीशन प्राप्त की। बाद में आगरा विश्वविद्यालय से समाज विज्ञान में एम.ए., पी–एच.डी., दिल्ली विश्वविद्यालय अनुवाद पाठ्यक्रम आदि में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यायावर नृविज्ञान में डी.लिट् व अन्य उपाधियाँ विदेशी विश्वविद्यालयों से प्राप्त की। 75 देशों में शोध सृजन के विश्व यात्री डॉ. शशि हिन्दी के पहले लेखक हैं जिन्हें भारत सरकार का उच्च राष्ट्रीय अलंकरण 'पद्मश्री' हिन्दी–अंग्रेजी, दो साहित्यों में अद्वितीय योगदान के लिए 1990 में प्राप्त हुआ था। उन्होंने 300 ग्रन्थ/विश्वकोष (Encyclopaedia Indica, 200 Volms., 'Roma The Gypsy World', 'The World of Nomads', 'Nomads of India' (National Book Trust) Publication, 'Nomads of The Himalayas' विशद् अंग्रेजी शोध ग्रंथ, हिन्दी में 25 कविता संग्रह व 'अग्निसागर' महाकाव्य, अनेक यायावर ग्रंथ, बाल साहित्य आदि कुल 500 से अधिक ग्रंथ/पुस्तकें लिखी हैं। –सम्पादक

आर्ष ग्रन्थ भारतीय मनीषा के अद्भुत अवदान हैं जिनकी मानव जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। वैदिक वाङ्मय ज्ञान–विज्ञान का विश्वकोष है तो 'सत्यार्थ प्रकाश' को विश्वकोषों का 'विश्वकोष' कहा जा सकता है तथा उसे पुस्तक जगत का 'महाकोष' कहना भी कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। वस्तुतः 'सत्यार्थ प्रकाश' केवल एक धर्मग्रन्थ ही नहीं, अपितु एक जीवन दर्शन है, जिसका पूर्वार्द्ध दस दिशाओं का प्रतीक है तथा उत्तरार्द्ध चारों ओर फैले अंधविश्वासों के तमस को तिरोहित करने के लिए बेबाक सत्य का प्रकाश प्रदान करता है। वह 'सत्यम् ब्रूयात' का पथ तो अपनाता है किन्तु 'प्रियम् ब्रूयात' की अपेक्षा 'जनहितम् ब्रूयात्' को प्राथमिकता देता है। जनहित में वैचारिक सर्जरी का होना स्वाभाविक है जो कुछ क्षणों के लिए कटु तथा कष्टदायक लगता है किन्तु उसका उद्देश्य अन्ततः स्वस्थ चिन्तन, विश्व कल्याण एवं विश्व शांति का वातावरण निर्मित करना है। 'सत्यार्थ प्रकाश' को लिखने का भी यही मन्तव्य रहा है जिसमें युग चिन्तक महर्षि दयानन्द ने नीर–क्षीर विवेक की तर्कशैली अपनाई है तथा ऋषि परम्परा का निर्वहन किया है। महर्षि 'सत्यार्थ प्रकाश' की भूमिका में लिखते हैं – ''मेरा इस ग्रंथ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाये। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसीलिए विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।''

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

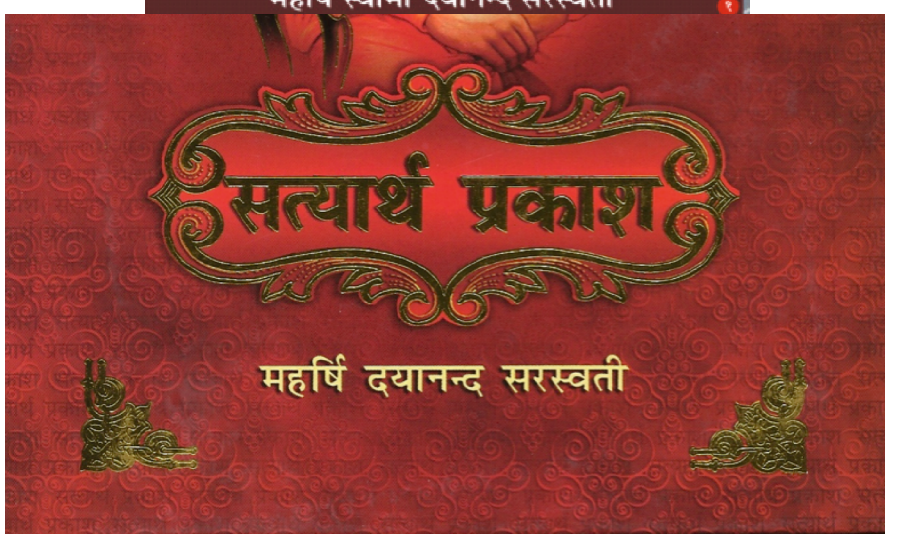

ऋषिवाणी इसी आनन्द तथा परमानन्द के लिए दस समुल्लासों में 'प्रियम् ब्रूयात्' का भी प्रश्रय लेती है। किन्तु संन्यासी की भाषा में 'सत्यम् ब्रूयात्' के साथ–साथ स्पष्टवादिता अथवा साफगोई न हो तो उसकी लेखनी सामान्य लेखकों की तरह पाठकीय रुचि के व्यामोह में भ्रमित भी हो सकती है। ऋषिवाणी का यह कथन 'सर्वजन हिताय' लेखन शैली को और अधिक तथ्यात्मक तथा धारदार स्वरूप प्रदान करता है। ऋषि का अभीष्ट किसी का दिल दुखाना नहीं, बल्कि प्यार का पारावार देना है। इसी सन्दर्भ में वे आगे लिखते हैं – ''मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य को जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन का सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है, परन्तु इस ग्रंथ में ऐसी बात नहीं रखी है और न किसी का मन दुखाना व किसी की हानि का तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।''

'सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में स्वामी जी का स्पष्टीकरण पढ़ने के बाद मन–मुटाव की स्थिति और भ्रांतियाँ स्वतः दूर हो जाती हैं। 'उत्तरार्द्ध' के चार समुल्लासों के बारे में स्पष्ट करते हुए स्वामी जी लिखते हैं – ''बहुत से हठी, दुराग्रही मनुष्य होते हैं जो वक्ता के अभिप्राय से विरुद्ध कल्पना किया करते हैं, विशेषकर मत वाले लोग। क्योंकि मत के आग्रह से उनकी बुद्धि अंधकार में फंसकर नष्ट हो जाती है। इसलिए जैसा मैं पुराण, जैनियों के ग्रन्थ, बायबिल और कुरान को प्रथम ही बुरी दृष्टि से न देखकर उनमें से गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग तथा अन्य मनुष्य जाति की उन्नति के लिए प्रयत्न करता हूँ, वैसा सबको करना योग्य है।''

'सत्यार्थ प्रकाश' की सामग्री पर दृष्टिपात करें तो हमें उसमें ज्ञान के माणिक मुक्ता का अक्षय भंडार मिलेगा। उसके चौदह अध्यायों में जिस अनुक्रम से सामग्री का प्रस्तुतीकरण किया गया है, वह किसी भी महान लेखक की प्रतिभा के अनुरूप है। स्वामी जी ने अध्यायों को अध्याय न कहकर 'समुल्लास' कहा है जो उनके मौलिक लेखन को प्रमाणित करता है। इन समुल्लासों की विषय सामग्री इस प्रकार है – प्रथम समुल्लास में ईश्वर के ओंकारादि नामों की व्याख्या, द्वितीय समुल्लास में सन्तानों की शिक्षा, तीसरे समुल्लास में ब्रह्मचर्य, पठन–पाठन व्यवस्था, सत्यासत्य ग्रन्थों के नाम और पढ़ने–पढ़ाने की रीति है। चतुर्थ समुल्लास में विवाह और गृहस्थाश्रम का व्यवहार है। पंचम में वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम की विधि, छठे समुल्लास में राजधर्म, सप्तम में वेदेश्वर विषय हैं। समुल्लास आठ में जगत की उत्पत्ति और प्रलय है। नवें समुल्लास में विद्या, अविद्या बन्ध और मोक्ष की व्याख्या है। समुल्लास दस में आचार, अनाचार और भक्ष्याभक्ष्य विषय हैं। एकादश समुल्लास में आर्यावर्तीय मत–मतान्तर का खण्डन–मण्डन विषय है। द्वादश समुल्लास में चारवाक, बौद्ध और जैन मत का विषय लिया गया है। तेरहवें समुल्लास में ईसाई मत का विषय तथा चौदहवें समुल्लास में मुसलमानों के मत का विषय समीक्षात्मक ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

उपर्युक्त सामग्री से विदित होगा कि स्वामी जी ने न तो किसी नये धर्म की स्थापना की और न ही किसी गुरुडम को बढ़ावा दिया। वस्तुतः इस ग्रन्थ को यदि पांचवें वेद की संज्ञा दी जाये तो उससे 'वेद' शब्द का विस्तार ही होगा, जिसका अर्थ 'ज्ञान' होता है। हम इसे वेद की पृष्ठभूमि पर आधारित ज्ञान की समालोचना–प्रत्यालोचना भी कह सकते हैं। यह ज्ञान ही आनन्द है जिसे स्वामी जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में गागर में सागर की तरह भरकर सर्वप्रथम हिन्दी में लिखा, अपनी मातृभाषा गुजराती अथवा पाण्डित्य भाषा संस्कृत में नहीं। सरल हिन्दी में होने के कारण यह ग्रन्थ तमाम देश में सर्व साधारण पाठकों तक पहुँचा, किन्तु उसका आधार ज्ञान मार्ग होने के कारण भक्ति मार्ग के पाठकों को विशेष आकर्षित नहीं कर सका। वास्तव में 'सत्यार्थ प्रकाश' में नवधा भक्ति जैसे प्रयोग भले ही न मिलें, किन्तु ईश्वर की व्याख्या करते समय उसके सौ नामों में 'ओम' को सर्वाधिक महत्व देना उनके वैज्ञानिक विश्लेषण का परिचायक है। मानव जीवन के सौ वर्षों का समग्र स्वरूप दृष्टि में रखते हुए स्वामी जी ने उसे ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास, चार आश्रमों की एक स्वस्थ दिशा प्रदान की है।

स्वामी जी की लेखनी जब मंडनात्मक होती है तो सात्विक प्रेमरस की वैचारिक वर्षा करती है और जब खंडनात्मक रूप ग्रहण करती है तो अकाट्य तर्कों के कारण मन–मस्तिष्क को एकबारगी झकझोर देती है। उसे सत्य–असत्य को समझने की सुबुद्धि तथा सद्विवेक प्रदान करती है। उनकी कलम जब अंधविश्वास, पाखण्ड तथा सामाजिक कुरीतियों के कारण मानव की त्रासदी से रूबरू होती है तो उसे सर्जन डॉक्टर की तरह चीर–फाड़ करते हुए भी देर नहीं लगती। उसके लिए अपने पराए का कोई भेद नहीं रहता। हम यहाँ स्वामी जी के समरस चिन्तन को दृष्टि में रखते हुए 'सत्यार्थ प्रकाश' के दो समुल्लासों के अंश प्रस्तुत करना चाहेंगे जिनसे स्पष्ट होगा कि स्वामी जी ने सत्य के संधान में किसी को नहीं बख्शा। उन्होंने सबसे पहले अपने घर के हिन्दू धर्म की ही खूब आलोचना की तथा 11वें समुल्लास में मूर्तिपूजा का जमकर खंडन किया। यानि उन्होंने पहले अपने ब्राह्मण समाज को नाराज किया और उसके बाद सिख, जैन, बौद्ध तथा हिन्दू समाज के मत–मतान्तरों के अनुयायियों को। यही कारण है कि 'सत्यार्थ प्रकाश' के विरुद्ध सर्वप्रथम आलाराम नाम के एक सिंधी हिन्दू संन्यासी ने इलाहाबाद कोर्ट में याचिका दायर की। संभवतः वह अंग्रेजों को खुश करना चाहता था, इसलिए उसने इस ग्रन्थ में ब्रिटिश शासन के विरुद्ध व्यक्त राजद्रोह का अभियोग चलाया जिसे जस्टिस हैरिसन ने स्वयं अंग्रेज होते हुए भी खारिज कर दिया। वर्ष 1944 में सिंध में मुस्लिम लीगी शासन था। वहाँ किसी सिरफिरे मुसलमान ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के 14वें समुल्लास पर बैन करने के लिए कराची में मुकदमा दायर किया जो कई पेशियों में बहस सुनने के बाद खारिज कर दिया गया। इसी प्रकार 'सत्यार्थ प्रकाश' तथा आर्य समाज के विरुद्ध समय–समय पर बहुत से मुकदमे चलाए गए जिनमें विरोधियों को मुँह की खानी पड़ी। दिल्ली कोर्ट में दायर मुकदमें का भी यही हश्र होगा, इसमें दो–राय नहीं।

'सत्यार्थ प्रकाश' के एकादश समुल्लास में मूर्तिपूजा के विरुद्ध स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि 'पाषाणादि मूर्तिपूजा तो सर्वथा छोड़ने और मातादि मूर्तिमानों की सेवा करने ही में कल्याण है। बड़े अनर्थ की बात है कि साक्षात् माता आदि प्रत्यक्ष सुखदायक देवों को छोड़ के अदेव पाषाणादि में सिर मारना स्वीकार किया। इसको लोगों ने इसीलिए स्वीकार किया है कि जो माता–पितादि के सामने नैवेद्य वा भेंटपूजा धरेंगे तो वे स्वयं खा लेंगे और भेंटपूजा ले लेंगे तो हमारे मुख वा हाथ में कुछ न पड़ेगा। इससे पाषाणादि की मूर्ति बना, उसके आगे नैवेद्य धर, घण्टानाद टं टं पूं पूं और शंख बजा, कोलाहल कर, अंगूठा दिखला अर्थात् 'त्वमङ्गुष्ठं गृहाण भोजनं पदार्थ वाऽहं ग्रहीष्यामि' जैसे कोई किसी को छले व चिढ़ावे कि तू घण्टा ले और अंगूठा दिखलावे, उसके आगे से सब पदार्थ ले आप भोगे, वैसे ही लीला इन पुजारियों अर्थात् पूजा नाम सत्कर्म के शत्रुओं की है। ये लोग चटक–मटक, चलक–झलक मूर्तियों को बना–ठना, आप ठगों के तुल्य बन–ठन के बिचारे निर्बुद्धि अनाथों का माल मारके मौज करते हैं। जो कोई धार्मिक राजा होता तो इन पाषाणप्रियों को पत्थर तोड़ने, बनाने और घर रचने आदि कामों में लगा के खाने–पीने को देता, निर्वाह कराता।''

उक्त संदर्भ में हम यहाँ बताना चाहेंगे कि आज मीडिया में गुरुडम, मूर्तिपूजा तथा अंधविश्वास को परोसने के कारण हिन्दुत्व तो बहुत फलफूल रहा है किन्तु आर्यत्व नहीं। इसी तरह जातिप्रथा तथा अस्पृश्यता के विरुद्ध, बुद्ध, महावीर, कबीर, नानक के बाद स्वामी दयानन्द, विवेकानन्द, महात्मा फुले, गांधी जी और डॉ. अम्बेडकर आदि ने आवाज उठाई थी। फलतः अस्पृश्यता

शेष पृष्ठ 6 पर

पृष्ठ 5 का शेष

सत्यार्थ प्रकाश : एक समाज वैज्ञानिक दृष्टि

तो काफी कम हो गई किन्तु वोट बैंक के कारण जाति–प्रथा के स्थान पर जातिवाद बढ़ता गया। आरक्षण के कई रूप हैं जिन्हें समाज वैज्ञानिक दृष्टि से आर्थिक आरक्षण, सामाजिक आरक्षण, राजनैतिक आरक्षण तथा सम्पर्क आरक्षण आदि विभिन्न शब्दावलियों में व्याख्यायित किया जा सकता है। वनवासियों दलितों तथा अन्य कमजोर वर्गों के लिए उपर्युक्त आरक्षणों के अभाव में भले ही एक सीमा तक संवैधानिक आरक्षण अपेक्षित हो, किन्तु कतिपय समाज वैज्ञानिकों तथा डॉ. अम्बेडकर के अनुसार भी उसे स्थायी बनाना उपयुक्त नहीं होगा। स्वामी जी ने 'मनुस्मृति' तथा अन्य स्मृति व पौराणिक ग्रन्थों में प्रक्षिप्त अंशों का खण्डन एवं विरोध किया। उन्होंने मनुस्मृति के श्लोकों को उद्धृत करते हुए प्रमाणित किया कि स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ने का पूर्ण अधिकार है। मनु की वर्ण व्यवस्था जन्म पर नहीं बल्कि कर्म पर आधारित थी। देखिए 'सत्यार्थ प्रकाश' के चतुर्थ समुल्लास में 'मनुस्मृति' से उद्धृत यह अंश –

''शूद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चौति शूद्रताम।
क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च।।

जो शूद्रकुल में उत्पन्न होके ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के समान गुण, कर्म, स्वभाव वाला हो तो वह शूद्र ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य हो जाये, वैसे ही जो ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य कुल में उत्पन्न हुआ हो और उसके गुण कर्म स्वभाव शूद्र के सदृश हों तो वह शूद्र हो जाये, वैसे क्षत्रिय वैश्य के कुल में उत्पन्न हो के ब्राह्मण व शूद्र के समान होने से ब्राह्मण और शूद्र भी हो जाता है। अर्थात् चारों वर्णों में जिस–जिस वर्ण के सदृश जो–जो पुरुष वा स्त्री हो वह–वह उसी वर्ण में गिना जावे।''

स्वार्थी पुरोहितों ने जहाँ हजारों देवी–देवताओं के मनगढ़ंत नाम लेकर आध्यात्मिक शांति की अपेक्षा उदरपूर्ति के लिए राजाओं के द्वारा छोटे–बड़े अनेक मंदिर बनवाए, जिनमें जन्मना ब्राह्मण ही पुजारी बन सकते थे, गैर–ब्राह्मण नहीं। यह भी मंदिरों में जातीय आरक्षण का ही एक रूप था। 'महाजनो येन गतः स पंथाः' के अनुसार यह आरक्षण पद्धति वोट बैंक तक पहुँचनी स्वाभाविक थी। हिन्दू समाज में आज छह हजार से अधिक जातियाँ उपजातियाँ हैं। स्वयं ब्राह्मण समाज में अनेक उपजातियाँ हैं। वर्णों का और भी बुरा हाल है। 'सत्यार्थ प्रकाश' में यद्यपि किसी प्रकार के आरक्षण की बात नहीं की गई किन्तु कर्म पर आधारित वर्णानुसार यथायोग्य कार्य करने पर जोर अवश्य दिया गया। गौतम बुद्ध, महावीर आदि ने जाति प्रथा का डटकर विरोध किया था। बहुत से संत महात्माओं ने समाज सुधार का बीड़ा उठाया किन्तु आज तक जाति प्रथा का उन्मूलन नहीं हो सका। स्वयं इन समुदायों में भी खामियाँ पैदा हो गई जिनको स्वामी जी ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में उजागर किया।

उपर्युक्त विषय को यहीं छोड़कर हम 14वें समुल्लास में वर्णित इस्लाम के बारे में स्वामी दयानन्द के कथन का एक अंश यहाँ दे रहे हैं, जिससे पता चलेगा कि स्वामी जी किसी अन्य धर्मावलम्बी से कदापि द्वेष नहीं करते थे। उन्हीं के शब्दों में ''यदि जो यह 14वां समुल्लास मुसलमानों के मत विषय में लिखा है सो केवल कुरान के अभिप्राय से। अन्य ग्रंथ के मत से नहीं क्योंकि मुसलमान कुरान पर ही पूरा–पूरा विश्वास रखते हैं। यद्यपि फिरके होने के कारण किसी शब्द, अर्थ आदि विषय में विरुद्ध बात है तथापि कुरान पर सब एकमत्य हैं। सब मतों के विषयों का थोड़ा–थोड़ा ज्ञान होवे, इससे मनुष्यों का परस्पर विचार करने का समय मिले और एक–दूसरे के दोषों का खण्डन कर गुणों का ग्रहण करें। न किसी अन्य मत न इस मत पर झूठ–मूठ बुराई या भलाई लगाने का प्रयोजन है किन्तु जो–जो भलाई है, वही भलाई और बुराई है, वही बुराई सबको विदित होवे न कोई किसी पर झूठा चला सके और न किसी सत्य को रोक सके और सत्यासत्य विषय प्रकाशित किये पर भी जिनकी इच्छा हो वह न माने वा माने। इसमें जो कुछ विरुद्ध लिखा गया हो उसको सज्जन लोग विदित कर देंगे, तत्पश्चात् जो उचित होगा, तो माना जायेगा, क्योंकि यह लेख हठ, दुराग्रह, ईर्ष्या, द्वेष, वाद, विवाद और विरोध घटाने के लिए किया गया है न कि इनको बढ़ाने के अर्थ। क्योंकि एक दूसरे की हानि करने से पृथक रहकर परस्पर को लाभ पहुँचाना हमारा मुख्य कर्म है।''

कुरान के अन्दर भी अन्य धर्मग्रन्थों की तरह अनेक विसंगतियाँ हैं, जिनका निराकरण अरबी भाषा के विद्वान ही कर सकते हैं। हो सकता है मनुस्मृति के प्रक्षेपों की भांति कोई मुसलमान स्कॉलर उसकी अलग व्याख्या करे अथवा किसी विद्वान के अर्थ को नकार दे। अलबत्ता महर्षि दयानन्द ने प्रामाणिक अनुवाद पर ही टीका–टिप्पणी की है। हम यहाँ केवल एक उदाहरण स्वामी जी की टिप्पणी के साथ दे रहे हैं – ''150 यह कि मस्जिदें वास्ते अल्लाह के हैं, बस मत पुकारो साथ अल्लाह के किसी को। (मंजिल 7, सिपारा 29, सूरत 72, आयत 18) (समीक्षक) यदि यह बात है तो मसुलमान लोग लाइलाह इल्लिलाह मुहम्मदर्रसूल्लाह' इस कलमे में खुदा के साथी मुहम्मद साहब को क्यों पुकारते हैं। यह बात कुरान के विरुद्ध है और जो विरुद्ध नहीं करते तो इस कुरान की बात को झूठ करते हैं। जब मस्जिदें खुदा के घर हैं तो मुसलमान महाबुतपरस्त हुए क्योंकि जैसे पुराणी, जैनी छोटी सी मूर्ति को ईश्वर का घर मानने से बुतपरस्त ठहरते हैं, ये लोग क्यों नहीं।''

ध्यातव्य है कि कबीर वाणी में हिन्दू–मुसलमानों की बुतपरस्ती, मूर्तिपूजा तथा अन्य सामाजिक कुरीतियों पर स्वामी जी से कहीं अधिक प्रहार किए गए हैं। अन्य हिन्दू–मुस्लिम संतों ने स्वतंत्र मत भी प्रकट किए हैं। वस्तुतः सच्चा संन्यासी न तो कोई लाग–लपेट रखता है और न ही किसी व्यक्ति या मत–विशेष के पक्ष में मिथ्या विवरण देकर किसी का दिल दुखाता है। वह निर्भीक स्वर में सत्यासत्य का विवेचन करता है।

स्वामी जी की मृत्यु पर मुस्लिम नेता सर सैयद अहमद खाँ ने कहा था – ''स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनुयायी उन्हें देवता स्वरूप मानते हैं जो वास्तव में सही लगता है। उन्होंने एकमात्र निराकार परमेश्वर की उपासना करने की शिक्षा दी, किसी और की नहीं। स्वामी जी के साथ हमारे घनिष्ठ सम्बन्ध रहे हैं और हम उनके प्रति सदैव श्रद्धाभाव बनाये रखेंगे। वे इतने बड़े विद्वान् थे कि वे अपने अनुयायियों के पूज्य बन गये थे। वह ऐसे आदमी थे जिनके समतुल्य आज इस समय तमाम हिन्दुस्तान में कोई नहीं है।''

रोमा रोलां ने स्वामी जी के बारे में कहा था – ''दयानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व अद्भुत है। वह शेर के समान हैं। वह एक ऐसा आदमी है कि जिसे यूरोप भारत का मूल्यांकन करते समय कभी नहीं भुला पायेगा। उसमें व्यावहारिक विचारक तथा मनीषी नेतृत्व का विरल सामंजस्य था।'' प्रो. मैक्समूलर ने उनके वेद भाष्य की भूरि–भूरि प्रशंसा की तो एच.ओ. ह्यूम ने उन्हें महान पुरुष मानकर अपनी श्रद्धा व्यक्त की है। सी.एफ. एन्ड्रयूज ने स्वामी जी के ग्रन्थों के सम्बन्ध में लिखा था – ''अनेक विद्वानों ने वैदिक अध्ययन के आधार पर पुस्तकें लिखी हैं जिन्हें कालांतर में भुला दिया गया। किन्तु एक ऐसा संन्यासी भी था जिसकी अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्नता तथा श्रेष्ठ नैतिक मूल्यों के कारण अतीत नए रूप में प्रकट हुआ। स्वामी दयानन्द की उपस्थिति भारत के लिए एक वरदान बनकर आई।'' स्वामी जी के शास्त्रीय कृतित्व तथा व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए देश–विदेश के विद्वानों तथा विचारकों ने उनसे प्रेरणा ली। प्रो. आर.एल. टर्नर, डॉ. स्टेन, डॉ. जेम्स एस कजनस, साधु वासवानी, महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, श्री अरविन्द, डॉ. राधाकृष्णन आदि ने भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण के परिप्रेक्ष्य में स्वामी जी को श्रद्धा–सुमन अर्पित किए थे।

सिंध में 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रतिबन्ध लगने पर जेल में बन्द जवाहरलाल नेहरू ने अपने 5 अक्टूबर 1945 के पत्र में लिखा था – ''मैंने 'सत्यार्थ प्रकाश' पर प्रतिबन्ध का समाचार तब पढ़ा, जब मैं अहमदनगर किले में बंदी हूँ। 'सत्यार्थ प्रकाश' पर बैन लगने से मुझे धक्का लगा तथा आश्चर्य तब हुआ, विशेष रूप से यह जानकर कि मुकदमा डीफेंस ऑफ इंडिया रूल के तहत चलाया जायेगा।'' उन्होंने आगे कहा – ''प्रश्न यह नहीं है कि हम 'सत्यार्थ प्रकाश' के गुण अथवा उसकी कमियों का बखान करें। हमारे लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है लेखन तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर पाबंदी। मैं 'सत्यार्थ प्रकाश' पर कोई अधिकारी विद्वान नहीं हूँ लेकिन मेरा मानना है कि यह नागरिक स्वतंत्रता का हनन है।'' उन्होंने आशा प्रकट की कि भावी भारत में धर्मग्रन्थों पर बैन नहीं लगाये जायेंगे। उन्होंने आर्य समाज के स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान को अप्रतिम माना।

'सत्यार्थ प्रकाश' के बैन का विरोध करने वालों में अन्य नेता तथा विचारक थे वीर सावरकर, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, पं. मदनमोहन मालवीय, डॉ. सीतारमैया, पुरुषोत्तम दास टण्डन, सरदार पटेल, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, सैफुद्दीन किचलू, प्रो. अब्दुल मजीद, होरनीमैन आदि। इस महान् ग्रन्थ पर प्रतिबन्ध अनेक बार लगे हैं किन्तु सत्य की सदैव जीत हुई है। कुछ आर्य विचारकों ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में विवादास्पद स्थलों पर पाद–टिप्पणी लिखने का मन बनाया तो उसका खुलकर विरोध हुआ। वस्तुतः जिस प्रकार साहित्यिक कृतियों के मूल्यांकन पर समालोचनात्मक शोध ग्रन्थ अथवा समीक्षा ग्रंथ प्रकाशित होते हैं, उसी प्रकार 'सत्यार्थ प्रकाश' पर भी समसामयिक परिप्रेक्ष्य में स्वतंत्र पुस्तकें प्रकाशित की जा सकती हैं। युवा पीढ़ी के लिए उसकी आवश्यकता पर वैज्ञानिक ढंग से साहित्य तैयार किया जा सकता है। आश्चर्य है कि अभी तक देश–विदेश की सभी भाषाओं व जनजातीय भाषाओं में भी अब तक 'सत्यार्थ प्रकाश' के अनुवाद नहीं हुए हैं।

इन पंक्तियों के लेखक ने 'सत्यार्थ प्रकाश' को पंडित गुरुदत्त की तरह 24 बार तो नहीं पढ़ा किन्तु पहली बार कक्षा छः में, दूसरी बार युवावस्था में और तीसरी बार हाल में ही पढ़ा है; सदैव कुछ नया ही मिलता रहा है। समाज वैज्ञानिक दृष्टि से अनेक नये तथ्य प्राप्त हुए हैं। इस कालजयी कृति के लेखक युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती की स्मृति को नमन।

– बी–4–245, सफदरजंग एन्क्लेव, नई दिल्ली–110029
मो.:– 9818202120, 41652399

सत्यार्थ प्रकाश

महर्षि कृत सर्वशुद्ध द्वितीय संस्करण द्वारा मुद्रित है अर्थात् 37वां संस्करण के अनुसार प्रकाशित है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा रचित अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश सर्वशुद्ध, द्वितीय संस्करण के अनुसार 20x30 के 8वें के बड़े साईज में कम्प्युटर द्वारा मुद्रित होकर तैयार है। पृष्ठ संख्या 432 रेक्सिन वाली जिल्द, लेमिनेशन वाला आकर्षक टाईटिल है।

प्रत्येक अक्षर मोतियों जैसा पठनीय है। कागज भी मजबूत और ग्लेज है।

मूल्य – अजिल्द – 160/– रुपये, सजिल्द – 225/– रुपये, डाक से मंगाने पर डाक व्यय अलग से देय होगा।

बुक मंगाते समय यदि आप सीधे राशि भेजना चाहते हैं तो निम्न खाते में राशि भेजकर दूरभाष पर सूचित करें :–

मधुर प्रकाशन
खाता संख्या–0127002100058167
IFSC Code No.- PUNB0012700
पंजाब नेशनल बैंक, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

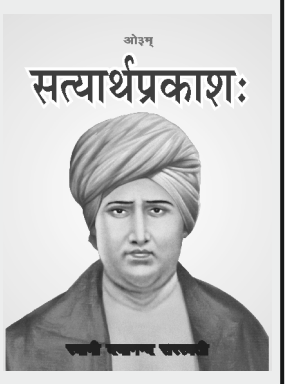

मधुर प्रकाशन
2804, गली आर्य समाज,
बाजार सीताराम, दिल्ली–110006
मो.:–9810431857

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

चारो वेदों का सेट

भारी छूट पर उपलब्ध

लागत मूल्य 4100/– रुपये

25 प्रतिशत छूट पर दिया जायेगा

डाक से मंगाने पर एक वेद सैट का डाक व्यय 200/– रुपये अतिरिक्त देना होगा।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

समलैंगिकता बनाम सामाजिक नैतिकता

– इंन्द्र सिंह

दिनांक 7 सितंबर 2018 को समाचार पत्रों में समलैंगिकता के विषय में माननीय सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय पढ़कर भारत की पूरी जनता स्तब्ध रह गई और अधिकतर की जुबान पर हैरानी भरी यही चर्चा है कि भारतीय समाज में सहमति से अनैतिक कर्म करने को अपराध की श्रेणी से बाहर कैसे निकाल दिया गया। हमारा प्राचीन इतिहास साक्षी है कि जब से सृष्टि की रचना होकर मानवी जीवन की व्यवस्था बनी है तब से लेकर वर्तमान काल तक इस भारत भूमि पर चोरी और जारी को सभी अन्य बुराइयों से अपेक्षाकृत सबसे बुरा माना जाता रहा है। यह हमारा इतिहास तथा सभी प्रकार के प्राचीन एवं अर्वाचीन धार्मिक तथा सामाजिक ग्रंथ बताते चले आ रहे हैं कि व्यभिचार से बढ़कर गंदा काम अन्य कोई नहीं हो सकता। इसलिए व्यभिचार को सर्वाधिक घृणात्मक दृष्टि से देखा जाता रहा है। समलैंगिकता की बात तो दूर दूसरे की पत्नी, माता, बहन और बेटी की ओर आंख उठाकर कुदृष्टि से देखना भी बड़ा पाप समझा जाता है। इसी तरह दूसरे के पति आदि की ओर कुविचार मन में आना स्त्री के लिए भी महापाप कहा गया है इसलिए आदि काल से अब तक उक्त आचरण का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति के लिए कड़े दंड की व्यवस्था रही है। बल्कि संतान उत्पत्ति ना करना हो और व्यर्थ में पति–पत्नी सहमति से भी समागम करते हो तो भी शास्त्रानुसार यह व्यभिचार की श्रेणी में आता है।

हमारे देश भारत ने लगभग एक हजार वर्षों से भी अधिक समय तक विदेशियों की गुलामी भोगी है। परंतु इसके बावजूद विदेशी शासकों ने भी हमारी सभ्यता संस्कृति और सामाजिक नैतिक मूल्यों का पूरा ख्याल रखा। अंग्रेजों ने भी इसलिए भारतीय दंड संहिता आई.पी.सी. की धारा 376 तथा 377 जैसी अनेक धाराओं का निर्माण किया क्योंकि वह भलीभांति जान गए थे कि परस्त्रीगामी होना, परपुरुष गामी होना तथा समलैंगिकता आदि सभी प्रकार के व्यभिचार इस देश की संस्कृति एवं

सामाजिक नैतिक मूल्यों के विरुद्ध होने के कारण अपराध हैं। बल्कि यहां तक है कि अश्लीलता भरी भावना से अन्य व्यक्ति को छूना या स्पर्श करना भी अपराध माना जाता है। स्पर्श करने की बात तो अलग, अश्लीलता पूर्ण संकेत दूर से करना भी अपराध है। पूरे संसार के बड़े–बड़े विद्वान इस बात पर एकमत हैं कि वेद संसार की लाइब्रेरी का पहला पुस्तक है और वैदिक धर्म से पहले पूरी पृथ्वी पर कोई अन्य मतान्तर आंसर नहीं था। 'वेद' ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण इसके नियमों का पालन करना हमारा मौलिक धर्म है। वर्तमान में जितने भी अन्य मत पंथ इस पृथ्वी पर हैं वह सब के सब वेद रूपी वृक्ष की विभिन्न प्रकार की शाखाएं हैं। इसी कारण सभी मत पंथों का कोई भी धार्मिक ग्रंथ समलैंगिकता को उचित नहीं ठहरा था क्योंकि यह स्पष्ट रूप से अप्राकृतिक होने के कारण अनैतिक है। बल्कि अमेरिका और यूरोप को छोड़कर लगभग 72 देश तथाकथित समलैंगिकता के घोर विरोधी हैं, वहां पर यह जघन्य अपराध होने के कारण इसके लिए कठोर दंड का विधान है।

उपरोक्त निर्णय के आने के पश्चात अभी से शिथिल इन मानसिकता वाले व्यक्तियों पर इसका कुप्रभाव पड़ने लग गया है। समाचार पत्रों में एक छोटी सी खबर आई है कि एक मां व उसके परिवार जनों को उनके बच्चे ने खुले तौर पर कहा कि अब हमारा आप क्या कर लोगे क्योंकि सहमति से समलैंगिकता अब कोई अपराध नहीं रहा है। इस निर्णय के भयंकर दुष्परिणाम तो भविष्य में आएंगे, जैसे संक्रामक रोगों की उत्पत्ति अर्थात छूत की बीमारियों का सहजता से आदान–प्रदान होने से असाध्य रोग उत्पन्न होंगे तथा नए–नए प्रकार के विवाद सुनने को मिलेंगे। भौतिक दुष्परिणाम ही नहीं आध्यात्मिक रूप से भी भारतीय जनमानस के लिए समलैंगिकता निश्चित रूप से अनैतिक कर्म है। लोग मानसिक रूप से पीड़ित रहने लगेंगे कोई भी कार्य करने के पश्चात करने वाले की आत्मा बता देगी कि उसने जो कार्य किया है वह ठीक किया है या गलत किया है। यह संभव ही प्रतीत नहीं होता कि समलैंगिकता का कार्य करने वालों की अंतरात्मा उक्त कार्य करने के पश्चात उसे उचित बताएगी। प्रायश्चित करने के अतिरिक्त उनके पल्ले कुछ नहीं होगा। वास्तव में चर्चाधीन निर्णय भारतीय समाज के लिए अप्रत्याशित है क्योंकि वर्ष 2013 में इस विषय से संबंधित प्रत्याशित निर्णय आ चुका था। उक्त स्थिति के दृष्टिगत उक्त निर्णय वेद अनुकूल ना होने के कारण आर्य समाज सहमति से समलैंगिक संबंध बनाने का पुरजोर विरोध करता है। अतः माननीय सर्वोच्च न्यायालय को अपने निर्णय पर पुनर्विचार करके यथाशीघ्र पहले वाली स्थिति बनानी चाहिए ताकि भारत की जनता की बेचैनी दूर हो सके और सामाजिक नैतिक मूल्यों का ह्रास रुक सके।

– पूर्व न्यायाधीश, संरक्षक आर्य समाज घण्टाघर,
भिवानी, हरियाणा, मो.:–9416057813

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ (आश्रम) टिटौली, रोहतक (हरियाणा) में
सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के कर्मठ कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों की एक महत्त्वपूर्ण बैठक
स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में हुई सम्पन्न
सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् एवं परिषद् के प्रमुख पत्र 'राजधर्म' की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में
10 मार्च, 2019 को स्वर्ण जयन्ती का भव्य समारोह मनाने का लिया गया निर्णय
हजारों आर्य युवकों का एक गणवेश एवं केसरिया पगड़ी में होगा प्रचण्ड शक्ति प्रदर्शन

नौजवानों! अभी से तैयारी प्रारम्भ कर दो

आर्य समाज के सशक्त एवं सक्रिय युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की स्थापना सन् 1967–68 में युवाओं के प्रेरणा स्रोत, त्यागी, तपस्वी, तेजस्वी संन्यासी पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी द्वारा की गई थी। परिषद् के तत्वावधान में हजारों युवा निर्माण शिविर आयोजित करके लाखों युवकों को आर्य समाज से जोड़ने का ऐतिहासिक योगदान किया है। परिषद् की स्थापना के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में परिषद् के संस्थापक पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज के जन्मदिवस 10 मार्च, 2019 को एक भव्य स्वर्ण जयन्ती समारोह आयोजित किया जा रहा है। इसी के साथ परिषद् के प्रमुख पत्र 'राजधर्म' के गौरवमय प्रकाशन के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में भव्य स्वर्ण जयन्ती समारोह आयोजित किया जायेगा।

यह दोनों कार्यक्रम एक साथ आयोजित होंगे। इस सम्बन्ध में निर्णय लेने के लिए गत् 16 सितम्बर, 2018 को परिषद् के कर्मठ कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों की एक हंगामी बैठक परिषद् के प्रधान पूज्य स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला–रोहतक में सम्पन्न हुई। बैठक में उपस्थित सभी कार्यकर्ता अत्यन्त उत्साहित थे और बड़े जोश–खरोश के साथ स्वर्ण जयन्ती समारोह को मनाने के लिए सभी ने पूरी ताकत लगाकर कार्य करने का संकल्प लिया। यह स्वर्ण जयन्ती समारोह आर्य समाज में युवाओं को दीक्षित करने के लिए अपनी विशेष भूमिका निभायेगा। परिषद् ने निश्चय किया है कि पिछले 50 सालों में जिन–जिन महानुभावों ने परिषद् में कार्य किया है उनका समारोह में विशेष सम्मान किया जायेगा। यह प्रयास किया जायेगा कि 50 जीवनदानी कार्यकर्ता परिषद् का कार्य करने के लिए उस दिन संकल्प ले सकें। स्वर्ण जयन्ती समारोह की विस्तृत योजना एवं कार्यक्रम शीघ्र ही तैयार करके पत्रिका में प्रकाशित किया जायेगा। बैठक में मुख्य रूप से परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द जी एडवोकेट, उपमंत्री प्रिं. आजाद सिंह जी, परिषद् की हरियाणा इकाई के पूर्व प्रधान श्री रामनिवास जी, डॉ. राजपाल आर्य, श्री सज्जन सिंह राठी, श्री अशोक आर्य, श्री अजीत पाल आर्य, श्री सत्यवीर आर्य, डॉ. होशियार सिंह, श्री श्यामलाल आर्य, श्री हरिकेश राविश एडवोकेट, श्री तलवीर सिंह आर्य, श्री महेन्द्र सिंह आर्य, श्री जयवीर आर्य सोनी, मा. हरपाल सिंह, मा. प्रवीण कुमार, बहन पूनम आर्या, बहन प्रवेश आर्या, कु. रिंकू आर्या, कु. शशि आर्या, एच.सी.एस., कु. रीमा आर्या आदि उपस्थित थे। बैठक का संयोजन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने बड़ी कुशलता से किया।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

बेटियों के जन्म पर मनायें खुशियाँ

– बहन पूनम आर्या

छपरौली आर्य समाज के कार्यकारी प्रधान श्री धर्मेन्द्र आर्य ने धूमधाम से मनाया बेटी अदिति का प्रथम जन्मदिवस

छपरौली :– छापरौली आर्य समाज के कार्यकारी प्रधान श्री धर्मेन्द्र आर्य की बेटी अदिति के प्रथम जन्मदिवस के अवसर पर यज्ञ के साथ विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम समारोह पूर्वक समाज के गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में मनाया गया। बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम आर्या ने ऋषि दयानन्द द्वारा निर्देशित यज्ञ करके उपस्थित महिलाओं व पुरुषों को भी इस प्रकार के कार्यक्रम करके बेटियों को समान अवसर प्रदान करने का संकल्प दिलवाया। सभी ने जीवेम शरदः शतम् का आशीर्वाद भी दिया।

इस अवसर पर अपने विचार रखते हुवे यज्ञ की ब्रह्मा बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन पूनम ने कहा कि आज बेटियों को लोग इस विकृत मानसिकता के कारण पेट में ही मार रहे हैं क्योंकि वो मानते हैं कि वंश बेटे से चलता है। लेकिन ये उनका अधूरा चिंतन है। क्योंकि बेटा व बेटी दोनों का ही वंश चलाने में बराबर का योगदान है। उससे भी आगे कहें तो वंश चलता है संस्कारवान पुत्र व पुत्रियों से । इसलिए आज बेटियों को भी बेटों के समान शिक्षा, संस्कार व आगे बढ़ने के अवसर प्रदान करने चाहिए ताकि जीवन की ये गाडी सहज में चल सके। यदि इस गाडी का एक पहिया ठीक नहीं होगा तो निश्चित मानिये के जीवन यात्रा का रथ आगे नहीं बढ़ पायेगा।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि पिछले कई दशकों से बेटियों को उपेक्षित समझा गया। उसी के परिणाम स्वरूप बेटियों की संख्या पहले से कम हुई है।यह चिंतनीय है।भविष्य में इस के परिणाम बहुत खतरनाक व भयावह होंगे यदि हम समय रहते नहीं सम्भले तो। आज बेटियां अवसर मिलने पर अपने आप को साबित करके दिखा रही हैं। साक्षी मलिक व सायना नेहवाल इसके ताजा उदाहरण हैं। इसलिए आप उनको उपेक्षित ना रखें बल्कि उन्हें अपनापन दें।

चेयरमैन संजीव खोखर ने कहा कि आज महिला किसी भी क्षेत्र में पुरुषों से पीछे नहीं हैं। देश के किसी भी क्षेत्र में जब बेटा पैदा होता है तो उत्सव होते हैं परन्तु आज बेटियों के जन्म को भी उत्सव के रूप में मनाया जाना चाहिए। उन्होंने कार्यक्रम का आयोजन करने के लिए धर्मेन्द्र आर्य व परिवार को शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर चेयरमैन श्री सुरेन्द्र चौहान, समाजसेवी ने मुख्य अतिथि बहन पूनम व प्रवेश आर्या को पौधा भेंट किया तथा अधिक से अधिक वृक्ष लगाने की प्रेरणा प्रदान की।

डॉ. भोपाल सिंह, पूर्व प्रधानाचार्य, श्री महक सिंह आर्य, पूर्व प्रधान आर्य समाज श्री राजसिंह आर्य, मा. कर्मवीर आर्य, प्रधान धर्मवीर सिंह मुकन्दपुर, योगेन्द्र आर्य, मा. पुष्पेन्द्र, सुशील, श्याम मोहन शर्मा, आर्य समाज के उपप्रधान श्री अवनीश आर्य, कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र आर्य, शिव कुमार आर्य ग्राम सबगा, श्री राजेन्द्र सिंह रठौड़ा तथा अन्य आर्य समाज के समस्त पदाधिकारियों ने बेटी को आशीर्वाद प्रदान किया।

बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या जी को पौधा भेंट करते हुए
समाजसेवी श्री सुरेन्द्र चौहान, साथ में छपरौली कस्बे के चेयरमैंन श्री संजीव खोखर
तथा बहन प्रवेश आर्या की गोदी में अदिति आर्या एवं श्री धर्मेन्द्र की माता जी साथ में

बहन पूनम एवं प्रवेश आर्या जी
बेटी अदिति आर्या के साथ

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।